ईश्वर प्राप्ति के उपाय – ईश्वर रहस्यमय है

ईश्वर ही हमारा वास्तविक घर है(ईंट पत्थर का घर वास्तविक नहीं)

सृष्टि किसी भी सृष्टि, किसी भी पदार्थ को उठाकर गहराई से देखों उसके ऊपर नीचे, अगल बगल सब जगह पर उसमें भिन्न रहेगा। सृष्टि से अंदर जितना भी पदार्थ तुहानू नज़र आता है यह सब महदूद है। कोई भी पदार्थ है उसके ऊपर भी खाली है नीचे भी खाली है। अगल बगल में सब खाली है। एक मनुष्य को ले लो। वह मनुष्य एक शरीर के अंदर खड़ा होता है। उसके ऊपर खाली है। अगल बगल में खाली है। बीच ही बीच में यह नज़र आता है। इस प्रकार सृष्टि का हर पदार्थ बीच ही बीच में नज़र आता है। सूर्य ले लो, चांद ले लो, निशा ले लो। ये सब महदूद पदार्थ है। यह सब ऊपर भी खाली है, नीचे भी खाली है, अगल बगल में खाली है। जो अगल बगल में खाली है और बीच ही बीच में है तो यह पदार्थ काल्पनिक माना जाता है। यह बनाया हुआ माना जाता है। यह बना हुआ माना जाता है। ज्योंकि जो भी आपकी अवस्था है इसमें यह जो महदूद पदार्थ नज़र आता है, यह बनाया जाता है। यह बनाने पर ही बनता है वैसे बनता नहीं है। इस लिए इसे कल्पना कहा जाता है। कल्पना के जरिए से यह तैयार होता है। हर पदार्थ देख लो – अग्नि, जल, वायु, आकाश, पृथ्वी ये भी अगल बगल पीछे खाली हैं। बीच बीच ही नज़र आता है।

इन चारों तत्वों का अनुसंधान करके देखो। तो ये सब बीच बीच ही नज़र आता है। अग्नि बीच में भी नज़र आएगा। आगे पीछे अगल बगल खाली होयेंगा। ऊपर आकाश होयेंगा, वायु होयेंगा, जमीन होयेंगा, जल होयेंगा। इनकी स्थिति बीच में ही है। अगल बगल खाली होयेगा। इसी प्रकार पृथ्वी का भी यही हाल है। जल का भी यही हाल है। वायु का भी यही हाल है। वायु के भी ऊपर आकाश होता है। बीच में वो भासता है। तो इससे यह सिद्ध होता है कि ये जितने भी सृष्टि में पदार्थ है ये महदूद है। ये सब एकदेशीय है। ये वास्तव में सच नहीं होता। सच वो है जो इसके पीछे भी कल्पना रहित स्थिति है वो होता है। जैसे हमारा शरीर का अस्तित्व। शरीर का अस्तित्व कुछ समय के लिए नज़र आता

है। पर सर्वत्र न होने की वजह से यह कालान्तर में गुम हो जाएगा। यह रहेंगे नहीं। ये जो पदार्थ बन कर बिगड़ जाता है उसे बनाया हुआ चीज माना जाता है। जैसे हमने पंचतत्वों का कहा इसी प्रकार मन, बुद्धि, चित, अहंकार का भी यही हाल है। जैसे कि मन को देख लो। मन जब संकल्प करता है, संकल्प छोड़ दे तो मन ही है नहीं। मन के भी अगल बगल कुछ नहीं है। ये बीच ही बीच नज़र आता है। बुद्धी नज़र आता है। विचार के पहले भी नहीं है, विचार के बाद भी नहीं है। चित का भी यही हाल है। अहंकार का भी यही हाल है। कहने का हमारा मतलब है कि ये जो सारे पदार्थ हैं, ये सब महदूद पदार्थ जो सृष्टि में नज़र आता है ये सब कल्पना होता है। कल्पित होने की वजह से यह बदलता है, कायम नहीं रहता है। बदल जाता है, बदल कर नष्ट हो जाता है। देखना यही है कि जैसे पंचतत्वों के अंदर शून्यवाद है। एक शून्य वाद हुआ है। जिस टाइम पर इन लोगों ने इस प्रकार अनुसंधान कर वायु तत्व तक पहुंचा। वायु तत्व तक पहुंचकर आकाश नज़र आया। आकाश नज़र आने पर आकाश को शून्य शज़्ल कहता है। उसका आदि अंत नज़र नहीं आता। इसलिए उन्होंने वहां तक ही शून्य माना। चार तत्व ही उन्होंने माना। पांचवा नहीं माना। इसी को शून्यवाद कहा। उन्होंने कहा शून्य है। शून्य में जाकर ही सब लय होता है। ज़्योंकि जो सबसे महान होता है छोटे का उसमें लय होता है। जैसे हमारा शरीर है यह छोटा होने की वजह से उसी में लय हो जाता है। जहां से ये उसी में यह लय होता रहता है। यह पैदा होता है और लय होता है। हर सेकंड पर इसका पैदा होना और लय होना जारी रहता है। एक सेकंड के लिए भी यह बंद नहीं होता है। किसी भी सूरत में।

तो कहने का हमारा मतलब है कि सृष्टि के अंदर जितने भी पदार्थ हैं ये महदूद होने की वजह से। अुकंधान करके देखा। फर्ज करो कि हम कल्पना ना करें। थोड़ी देर के लिए कल्पना को रोक लें तो यह सृष्टि कहां जाता है – ज़्या हाल होता है। बुद्धि के अंदर विचार ना हो, मन के अंदर कल्पना न हो, चित के अंदर चितवन ना हो। ऐसी स्थिति किस तरह हो यह एक गहराई से विचार करने का विषय है। ज़्योंकि इसका अभाव सिद्ध होता है। कल्पना के पहले मन नहीं था, कल्पना के बाद भी नहीं है। विचार के पहले बुद्धि

नहीं था, विचार के बाद भी नहीं। इसी प्रकार चितवन के पहले भी चित नहीं था बाद में नहीं। इसी प्रकार अहंकार की स्थिति है। मलिन अहंकार। कहने का हमारा मतलब है कि एक के बाद एक यह जो बढ़कर नज़र आता है इससे सिद्ध होता है कि अहंकार के पीछे एक पदार्थ है जिसके जरिए से ये सारा का सारा सिद्ध होता है। यह सब कुछ जो भास रहा, आकाश के अंदर ये चारों तत्व भास रहा। इसी प्रकार हम और तुम ये सारी सृष्टि आकाश के अंदर भास रहा। आकाश के आभाव के अंदर जो भास रहा, ये कल्पना माना जाएगा। कल्पना के जरिए से ही ये सिद्ध होगा। जैसे कल्पना का निरोध करने पर सृष्टि का कोई अस्तित्व सिद्ध नहीं होता। जब कल्पना होता है तब जाकर ये प्रतीत होता है। जब कल्पना सत्य होता है, जैसे सुषुप्ति अवस्था के अंदर कल्पना हो जाता है उस टाइम पर इसका अस्तित्व बिलकुल नजऱ नहीं आता है। तो कहने का हमारा मतलब है कि वास्तव में जो बीच ही बीच में जो पदार्थ होता है उसका अस्तित्व नहीं माना जा सकता है। जो बीच ही बीच हो आगे पीछे न होकर वह सच नहीं, कल्पना होगा। जैसे दीवार के अंदर न होकर वह सच नहीं, कल्पना होगा। जैसे दीवार के अंदर एक बिंदु लगा दिया जाए तो वो बिंदु सच नहीं माना जाएगा। ज़्योंकि वो दीवार तो पहले भी मौजूद थी, उसके ऊपर बिंदु लगाया गया। वो महदूद होगा, वो सच नहीं माना जा सकता। इसी प्रकार इस समस्त सृष्टि के ऊपर जो एक व्यापक पदार्थ है उसके ऊपर कल्पना के जरिए से एक बिंदु लगा हुआ है। यह बिंदु ही हमें भिन्न भिन्न शज़्लों के अंदर भासता है। ये अग्नि, जल, वायु, आकाश जितने भी पदार्थ हैं उसके अंदर प्रतीत होता है। आकाश का मतलब मैंने पहले कहा कि उसमें से शून्यवाद पैदा हो गया। मगर शून्यवाद सच हो सकता है, यह भी एक गहन विषय है। गहराई से विचार करके देखो तो शून्यवाद भी सिद्ध नहीं होयेंगा। ज़्योंकि आकाश को एक पदार्थ सिद्ध करता है कि आकाश है। आकाश के अस्तित्व को जो जानता है वो आकाश को भी घेर कर खड़ा हुआ है। इस दृष्टि से आकाश भी महदूद होगा, वो सर्वव्यापक नहीं हो सकता। यदि आकाश को घेर कर खड़े होने वाले पदार्थ का आभाव मान लिया जाए तो आकाश का अस्तित्व कभी भी सिद्ध नहीं होगा। यब आकाश का अस्तित्व है तो लाजिमी

है कि आकाश को घेरने वाला कोई छुपा हुआ पदार्थ है। यदि उसको घेर कर नहीं खड़ा है तो वो उसको जान नहीं सकता है।

<u>कारण का असमर्थता –</u>

इस सृष्टि को मन जानता है, बुद्धि जानता है। इसका मूल है कि इस सारी सृष्टि को घेर कर वो खड़ा हुआ है। घेर कर खड़ा होने के बावजूद भी वो महदूद ही रहता है। व्यापक नहीं बनता है। क्योंकि इसके पीछे ऐसी शक्ति है, आकाश के पीछे ऐसा शक्ति छुपा हुआ है जिसके जरिए से आकाश सिद्ध होता है। वो ही सर्वत्र भरा हुआ है। उसके अंदर से सृष्टि, स्थिति कुछ नहीं। सवाल यह है कि क्या वहां जाकर उसका पता लगा सकता है? बात यह है वहां पहुंचते पहुंचते ये जितने भी कारण है, ये सारे के सारे लय हो जाता है। इसका मतलब है ये कारण कुछ भी नहीं कर सकते। जैसे मन, बुद्धि वगैरह कारण माना जाता है, इंद्रिय कारण माना जाता है। वहां पहुंचते पहुंचते हमारा मन बुद्धि, कारण वगैरह लय हो जाता है तो फिर उसका मतलब कोई कुछ भी नहीं कह सकते। मगर कुछ न कहने के बावजूद भी उसका आभाव नहीं सिद्ध नहीं होता है। जैसे सुषिप्ति अवस्था के अंदर हम जाता है तो हमारा करण लय हो जाता है। मन, बुद्धि भी लय हो जाता है। यह सब कुछ नज़र आता है। लय होने के बावजूद भी एक पदार्थ उसके अंदर था, लाजिमी था। यदि ना हो तो दोबारा हम जाग भी नहीं सकता है। मगर उसका बताने वाला पदार्थ तो है ही नहीं। आखिर कुछ भी पदार्थ बताना हो तो मन, बुद्धि कुछ होना चाहिए। तभी जाकर वो बताएगा कि ये चीज है, कल्पना है, वो है, ये है। ये तो मन, बुद्धि की क्रियाएं हैं। मगर बुद्धि वहीं जाकर लय हो जाता है। लय होने के बाद उसका बताने वाला कोई पदार्थ रहता नहीं जो उसे एक्सप्लेन कर सके। उसको बता सके कि ये फलाना चीज है।

जैसे सुषुप्ति अवस्था है, ये एक्सप्लेन नहीं होता है। जागने पर एक संस्कार मात्र है? हम कह देता है कि हमें बड़ा भारी आनंद मिला। वास्तव में उसको एक्सप्लेन करने वाला उस जगह के अंदर कोई नहीं होता। सुषुप्ति अवस्था के अंदर सुषुप्ति को एक्सिप्लेन करने वाला कोई नहीं रहता है। वो लय रहता है क्योंकि वहां करण कुछ भी नहीं रहता है।

वो लय रहता है ज़्योंकि वहां करण कुछ भी नहीं। इसी प्रकार आत्मा तत्व के अंदर, ईश्वर तत्व के अंदर जब लय हो जाता है। उसका मतलब कहने वाला कोई पदार्थ नहीं होता है। ज़्योंकि कहने वाला पर्दाथ जितने भी हैं वहां पहुंचते पहुंचते अपना अस्तित्व खो बैठता है। फिर ज़्या बचेगा जिसको कहा नहीं जा सकता है वही बचेगा। जैसे मन के अंदर भी वही पदार्थ छुपा हुआ है, उसे वो कह नहीं सकता है। मन मन को यह नहीं कह सकता है कि मन ज़्या है। बुद्धि बुद्धि को नहीं कह सकता कि बुद्धि ज़्या है। इसी प्रकार आंख आंख को नहीं सकता है कि आंख ज़्या है। कान कान को नहीं कह सकता है कि कान ज़्या है। इसी प्रकार हमारे जितने इंद्रियों के विषय है उनको जबान नहीं कह सकता है ज़्योंकि जबान वहां पहुंचेगा नहीं। वो ज़्या है यह कोई नहीं कह सकता है। यह कारणों के जरिए नहीं होता है। तो जब सुषुप्ति अवस्था होता है तो कारण नहीं होने से सुषुप्ति अवस्था को कहा नहीं जा सकता है। इसी प्रकार उस ईश्वर स्थिति के अंदर ईश्वर होता है उसे कहने वाला कोई नहीं होता है। मगर उसका अभाव नहीं सिद्ध होता है किसी भी सूरत में। कुछ लोगों ने वहीं पहुंच कर कहा कि इसका अभाव है। वहां पहुंच कर यह सिद्ध नहीं होता है। वहां शून्यवाद हुआ और भी अन्य किस्म का वाद शुरू हुआ। कुछ विवाद शुरू हुआ कि उसके ऊपर कोई पदार्थ नहीं है। पर सवाल यह है कि ऐसा नहीं हो सकता है ज़्योंकि वहां जाने के बाद भी, कहने वाला कोई न होने के बावजूद भी कोई पदार्थ वहां मौजूद था। कहने वाला कहां गया, यह सवाल दूसरा प्वाइंट है। जो मन बुद्धि को कहता है कि यह फलाना पदार्थ है, यह फलाना आदमी है, यह फलाना विषय है, फलाना देश है, वो ये सब मन बुद्धि ही बतलाता है। सवाल है यह बुद्धि आत्मातत्व की तरफ बढ़ते बढ़ते कहां जाता है इसको गहराई से देखना चाहिए।

आखिर वो सब कुछ कहने वाला वहां जाकर गुम हो जाता है। उसका अस्तित्व ज़्यूं समाप्त होता है। इसका जवाब यही है कि ज्यों ज्यों वो आत्मातत्व की तरफ बढ़ता जाता है वो सूक्ष्म होता जाता है। सूक्ष्म होते होते उसके अंदर जो स्थूलता है वो खत्म हो जाता है। स्थूलता खत्म होने पर उसके अंदर जो सूक्ष्म पदार्थ है वो ही बचा रहता है।

वह चैतन्य शक्ति है। उसको कहने वाला कोई नहीं है। उसका स्थूलावस्था खत्म हो गया। मन बुद्धि का स्थूलावस्था खत्म हो गया। स्थूलावस्था खत्म होने पर जो बनेगा उसे जबान से एज़्सप्लेन नहीं किया जा सकता है। उसका स्थूलावस्था नहीं होता है। दोबारा जब उसका स्थूलावस्था बनता है तब एक संस्कार मात्र स्मरण रहता है कि हां ऐसा था कोई। कुछ आनंद वहां मिला जरूर। एक संस्कार मामूली संस्कार मिलता है। किंतु उस मामूली संस्कार के स्थान होगा अतः अंतः कारण के अंदर जितने भी मिकार हैं, उन विकारों को खत्म करो विकारों को खत्म किए बिना कभी भी आनंद नहीं हो सकता। जब तक विकार हैं आनंद नहीं मिल सकता। जैसे यह विकार का यह एक किस्म का शरीर का फोड़ा फुंसी का है। हमारे शरीर में कोई फोड़ा फुंसी हो जाये तो जब तक फोड़ा फुंसी है चैन नहीं मिलता। जब तक चीर-फाड़ कर उसके अंदर के गंदगी नहीं निकाली, चैन नहीं मिलता। इसी प्रकार मन के अंदर जितना भी यह फोड़ फुंसी उगा हुआ है, यह बेचैन करता है, रात दिन हमें चैन से बैठने नहीं देता। फोड़ होने की वजह से चैन नहीं बैठ सकते। वास्तव में यह रोग न हो तो विषयों में हमें दुख नहीं होना चाहिए, यदि वास्तव में यह रोग न होता। विषयों के हमें ऐसा नहीं होना चाहिए और सृष्टि में हम जितने पदार्थों के साथ हम साप के जोड़ता है आखिर परिणाम इसका कुछ ही निकलेगा जैसे शाप के अंदर अहंकार कर बैठा, इसका परिणाम ज़्या होगा, इसका परिणाम कुछ भी दुख ही होगा। जब फिकर पैदा कर रहा होएगा, रोग पैदा हो गाएगा, यह शरीर ऐसे ही दुखी रहेगा। इसके विषयों की इच्छा मन में बनी रहती है। अलग में जिसे हम आनंद आगे पीछे कुछ ना रहने की वजह से वो कायम नहीं रह सकता है। जिस पदार्थ के आगे पीछे कुछ भी ना हो वो कायम नहीं रह सकता है। किसी भी सूरत में। जिस पदार्थ के आगे पीछे कुछ भी ना हो वो कायम नहीं रह सकता है। वो बदल जाएगा। जिसमें बदलने का गुंजाइश हो, वो नष्ट हो जाएगा। कायम कभी नहीं रहेगा। किसी भी सूरत में।

कितने भी तुसी कोशिश कर लो ये कायम नहीं रहेगा। कुछ लज़्बे अरसे तक किसी टिरक के नाल बढ़ा भी दिया तो कभी कायम नहीं रहेगा। ज़्योंकि जिसके आगे पीछे

कुछ ना हो तो वहो कभी रह ही नहीं सकता है। इस दृष्टि से देखें तो अग्नि, आकाश, वायु, जल, पृथ्वी, इसके भी आगे पीछे कुछ नहीं होने से ये भी कायम नहीं रहता। ये कुछ भी नहीं रहेंगा, फिर ज़्या रहेंगा। जिसके जरिए से ये सब कुछ हो रहा है, जिसके आगे पीछे कुछ नहीं हो सकता। ज़्योंकि ईश्वर अंदर भी वो मस्त रहता है। कहने का हमारा मतलब कि करण के अभाव के अंदर भी वो चीज मौजूद है। उसी कारण के जरिए से ये करण काम करता है। मन बुद्धी काम करता है, इंद्रिय काम करता है और सृष्टि के अंदर जितने भी पदार्थ नज़र आते हैं सब उसी के जरिए से काम करते हैं। यदि उसका अभाव हो, थोड़ी देर के लिए भी तो इसका अस्तित्व सिद्ध नहीं हो सकता है। जैसे हम सुषिप्त अवस्था के अंदर जाता है, सुषिप्ति अवस्था के अंदर जाते ही हमारा मन बुद्धि वगैरह लय हो जाता है। लय होने के बाद भी जब वह मन बुद्धि दोबारा पैदा होता है उसके लिए कोई वजह चाहिए। बिना वजह के ये मन बुद्धि वगैरा दोबारा पैदा नहीं हो सकता है। ये मन बुद्धि को दोबारा जागृत करने वाला पदार्थ उसके अंदर छुपा हुआ होयेगा। या मन बुद्धि का शकल धारण करने वाला पदार्थ उसके अंदर छुपा हुआ होगा। नहीं होगा तो वह दोबारा बन ही नहीं सकता है। दोबारा जब भी बुद्धि पैदा होता है इससे सिद्ध होता है कि उसके अंदर भी बुद्धि बनने वाला एक पदार्थ मौजूद है। वह लय हो गया तो इसीलिए आनंद फिर यहां भी नहीं रहता। आखिर मजबूर होकर मन ढूंढते ढूंढते थक जाता है, थक जाने पर वह निद्रा अवस्था की तरफ बढ़ने लग जाता है। तक जाता है और उसी आनंद को ढूंढते हुए दुखी हो जाता है पर कभी ठिकाना नहीं मिलता तो फिर वह खुद-बखुद सुषुप्ति की ओर बढ़ने लग जाता है। सुषुप्ति की तरफ फिर उसको वह आनंद मिल जाता है। फिर कुछ समय वहां आराम करता है मगर वह भी कायम नहीं रहता। वह मायर है, मायक पदार्थ के साथ संबंध होने की वजह से कुछ देरी के बाद फिर बदल जाता है, कभी शुषुप्ति के अंदर जाता है। जाग्रत में नहीं मिलता तो सुषुप्ति में ढूढता है। वह आनंद दोनो जगह मिलता नहीं, अत: जिंदगी भर वह चक्रों में पड़ा रहता है। इस चक्र में कोई किनारा नहीं मिला। आखिर फिर इसका किनारा रहा हो। फिर वह अनुभर करता है कि सुषुप्ति के भी पीछे जो काम कर रहा है, वही इसका आधार होगा। सुषुप्ति के अंदर मन बुद्धि के लय होने के बाद कारण शरीर के

लय होने के बाद एकबड़ा भारी आनंद था। उसके अंदर विकार रहित अखण्ड आनंद की प्राप्ति होगी, वही प्राप्ति के आगे पीछे का सवाल ही नहीं होता है। ज़्योंकि सर्वत्र है वो। ऐसा कोई पदार्थ, कोई चीज तुसी सिद्ध नहीं कर सकते हो जिसके अंदर वो मौजूद न हो। यदि ईश्वर को मदूद मान लिया जाये तो ईश्वर भी पांच तत्वों जैसे नष्ट हो जाएगा। मगर ईश्वर ऐसा पदार्थ नहीं। ऐसा कोई पदार्थ, कोई जगह ऐसी नहीं होयेगी, जहां वो मौजूद न हो। उसी के जरिए से वो सिद्ध होता है। यदि ईश्वर न हो तो कोई भी पदार्थ सिद्ध नहीं होता है। कारण के अभाव के अंदर भी वो मौजूद होयेंगा। कारण के अंदर भी वो ही काम करता है। कारण के पीछे जो शक्ति है वह हट जावे तो करण का अस्तित्व ही खत्म हो जावे।

करण कब तक है? जैसे हमारा स्थूल शरीर कब तक कायम है जब इसके अंदर वो चैतन्य शक्ति है। यह चैतन्य हटा लिया जावे तो यह शरीर कायम रह सकता है? एक सैकंड के लिए भी यह कायम नहीं रह सकता है। उसी सैकंड पर यह खत्म हो जाता है। उसी प्रकार ये अंतकरण है उसके पीछे जो चैतन्य शक्ति छुपा हुआ है, उसी के जरिए से इसका सब अस्तित्व है। यदि वो चैतन्य शक्ति आनंद स्थिति कहो ज्ञान स्थिति कहो कुछ भी कहो। भिन्न-भिन्न तरह से उसे कहा जाता है। ये सारा का सारा उपाधि है। उसका लक्षण है यह गुण है, कुछ भी समझ लो। वास्तव में वह पदार्थ ये सब कुछ होने के बावजूद कुछ भी नहीं। ये सब कुछ नहीं होने के बावजूद भी वह सब कुछ है। ये ही उसके अंदर खूबी है। वैसे वह कुछ भी नहीं मगर सब कुछ वही है। उसके अभाव के अंदर कोई चीज सिद्ध नही हो सकता है। मगर उसका भाव भी सिद्ध नहीं हो सकता है। मगर उसका भाव भी सिद्ध नहीं होता है। ज़्योंकि उसे सिद्ध करने वाला कोई पदार्थ नहीं है। ज्यों ज्यों आत्मतत्व का चिंतन करते रहेंगे, मन बुद्धि वहैरग लय हो जाता है। तो आत्मा का चिंतन करने वाला या आत्मा को सिद्ध करने वाला कोई पदार्थ बचता नहीं है। आत्मा को सिद्ध करने वाला पदार्थ नहीं बचने के बावजूद यह आत्म का अस्तित्व क भी मष्ट नहीं होयेंगा। यह बदस्तूर भी यह आत्म तत्व फैला रहता है। फैला हुआ है तभी वह आत्मतत्व मौजूद हुआ नहीं तो दोबारा वह पैदा नहीं हो सकता है। ज़्योंकि मन बुद्धि वगैरह लय होने के बाद जब मन बुद्धि

दोबारा पैदा होता है तो निश्चित है कि वह पदार्थ मन बुद्धि की शज़्ल में पैदा होता है यही विवर्तवाद कहा जाता है।

<u>सिद्ध करने वाले के अभाव को किसने सिद्ध किया?</u>

<u>प्रश्न ही उत्तर है:-</u>

हर शज़्ल में वही परमात्मा, मन का शज़्ल में बुद्धि के शज़्ल में, इंद्रियों की शज़्ल में शरीर के शज़्ल में या वृक्षलता आदि भिन्न भिन्न शज़्लों में जो कुछ प्रतीत होता है वही आत्मतत्व है। यही विवर्तवाद है। ब्रह्मसूत्र इत्यादि ग्रंथों में यही विवर्तवाद है। ये सृष्टि के अंदर जितने भी पदार्थ हैं सब उसी के जरिए से प्रतीत होता है। वही भिन्न भिन्न शज़्लों में प्रतीत होता है। वास्तव में कोई पदार्थ भिन्न नहीं होत। यदि सिद्ध करने वाले पदार्थ के अभाव में भी वो सिद्ध है तो सिद्ध करने वाले पदार्थ के अभाव में उसको किसने सिद्ध किया? यह एक पाइंट है। सिद्ध करने वाले के अबाव को किसने सिद्ध किया?

जैसे आत्म को सिद्ध करने वाले मन, बुद्धि अन्त: करण वहां पहुंचते पहुंचते लय गो हया तो इसको किसने सिद्ध किया? वो ही पदार्थ जो होता है, वो ही सच होता है। उसे आत्मतत्व या परमात्मतत्व कह दिया जाता है। वहीं जाकर कल्याण होता है। वास्तव में हमारा घर वो ही है। इसके अलावा हमारा कोई घर नहीं। बाकी सब बनावटी घर है। वो सब कायम नहीं रहेगा। अब यह मकान है। इसके ईपर नीचे अगल बगल कुछ भी नहीं है। सब खाली है। खाली होने की वजह से ये बदल जाएगा। ये रह ही नहीं सकता ज़्योंकि यह कल्पित है। इसी प्रकार इस सृष्टि के अंदर सब पदार्थ महदूद होने की वजह से वो कायम नहीं रहेगा। नष्ट होयेगा। आज नहीं तो कल, कल नहीं तो परसों। नष्ट हो जाएगा। वह रह नहीं सकता। ज़्योंकि यह सच नहीं माना जा सकता है। सच वो है जिसके ऊपर मन सच प्रतीत होता है। मन सच नहीं मगर जिसके ऊपर मन सच प्रतीत होता है वो सच है। बुद्धि सच नहीं मगर जिसके ऊपर बुद्धि सच प्रकीक होता है वह सच है। चित सच नहीं मगर जिसके ऊपर यह चित सच प्रतीत होता है वो सच है। अहंकार सच नहीं मगर जिसके ऊपर

ये अहंकार सच सिद्ध होता है वो सच है। वो ही आत्मतत्व होगा। उसे ही परमात्म तत्व कहता है। वास्तव में ये असली चीज वही है। बाकी यह जितने भी चीजें है कल्पित हैं। जग की जब तक मन बुद्धि वगैरह कल्पना न करें यह कभी सिद्ध नहीं होयेंगा। अग्नि को सिद्ध करना हो, जल को सिद्ध करना हो, वायु को सिद्ध करना हो या भिन्न पदार्थ को सिद्ध करना हो तो मन बुद्धि का जरूरत है। मन बुद्धि बिना कभी भी सिद्ध नहीं हो सकता है। अग्नि भी जब सिद्ध करना हो तो मन बुद्धि हो तभी जाकर अग्नि सिद्ध हो सकता है। मन बुद्धि के अभाव में अग्नि कभी भी सिद्ध नबीं होगा। तुसी जल लो उसके अंदर कोई असर नहीं होयेगा। जैसे स्थूल शरीर को तुसी फूंक देता है, उसके अंदर मनबुद्धि न होने से कोई असर नहीं होता है। किसी प्रकार का असर नहीं होता है। तो कहने का मतलब बै कि वास्तव में ये मनबुद्धि वगैरह जिसके जरिए से फैला होता है वही सिद्ध है उसको परमात्मा कहता है उसी को ब्रह्म कहता है। हर जगह सबके अंदर समान रूप से रहता है। कहने का मतलब है महदूद स्थिति को देखते हो तो समझ लो यह बनाया हुआ है। जो चीज बनाया हुआ होगा वह सच नहीं होगा। ज़्योंकि सच को बनाने की जरूरत नहीं होती है। कल्प बनता कब है जब कल्पना होगी तभी जाकर बनेगा। ज़्योंकि सत्य के लिए कल्पना की कोई जरूरत नहीं है। सत्य एक ही है उसके लिए कल्पना की कोई जरूरत नहीं है। जो आत्मतत्व इसके अंदर छुपा हुआ है उसे बनाया नहीं जा सकता है। कोई भी उसे बना नहीं सकता है। ज़्योंकि वहां पहुंचते तक बमनाने वाला कोई रहता नहीं है। वहां करण कुछ नहीं है। बिना कारण के कुछ बनाया नहीं जा सकता है। किसी चीज को भी बनाना हो, वहां करण जरूरत होता हैष मगरआत्मतत्व तक पहुंचते पहुंचते करण सब खत्म हो जाता है। उसका बनाने वाला कोई सिद्ध नहीं होयेगा। वह स्वंय सिद्ध है। जिसको बनाने वाला कोई न हो उसे स्वंय सिद्ध कहा जाता है। देखो न सृष्टि के अंदर जितने भी पदार्थ है ये स्वयं सिद्ध नहीं होयेगा। ये सब बना हुआ है इसलिए ये स्वयं सिद्ध नहीं होयेगा। जिस पदार्थ को कभी बनाया नहीं जा सकता है, वहीं स्वयंसिद्ध पदार्थ होयेंगा। वहीं स्वयं होगा। वलही चैतन्य शक्ति है।उसे कभी बनाया नहीं जा सकता है। इसलिए हमारे कहने का मतलब है कि यदि मनुष्य जीवन को सफल बनान है, यथार्थ को समझना है तो अपने आप ही विचार

करके देखो कि हमारे अगल बगल ऊपर नीचे सब खाली है। बीच ही बीच में यह प्रतीत होता है। अगल बगल में खाली न हो तो ज़्या यह प्रतीत हो सकता है। कभी भी प्रतीत नहीं होयेगा। जो पदार्थ भी सृष्टि में प्रतीत होता है, अगल बगल खाली होने से ही प्रतीत होता है। नहीं तो नहीं हो सकता है। वृक्ष हो, लता हो, पशु हो, पक्षी हो, जल हो अग्नि हो, आकाश हो, वायु हो, कुछ भी हो। जो कोई भी पदार्थ तुसी देखता है उसके अगल बगल खाली होयेंगा। जो अगल बगल में खाली नहीं है उसे तुसी नहीं देख सकता है। कल्पना ही नहीं कर सकता है। ज़्योंकि वहां कल्पना जाएगा नगीं। इसलिए सिद्ध हुआ कि ये सब मन बुद्धि वगैरह कल्पना से बना हुआ है। इसके पीछे ऐसा एक पदार्थ है जो फुल है। उसे तुसी मन बुद्धि वगैरह से समझ नहीं सकता है। मगर फुल का आभाव नहीं सिद्ध होयेंगा। महदूद पदार्थ है तो लाजिमी है कि फुल भी रोई पदार्थ है। एक बिंदु तुहानू प्रतीत हो तो व्यापक पदार्थ भी मानना होगा। तभी जाकर वो ुबंदु सिद्ध होता है। इसी दृष्टि से वो चैतन्य शक्ति सर्वत्र भरा हुआ है। उसके अगल बगल कुछ नहीं होने से वह नजर नहीं आता है। देखो न जो पदार्थ हमें नजर आता है उसके अगल बगल में कुछ नहीं होयेंगा। मगर ईश्वर अगल बगल में आभाव नहीं है, सर्वत्र भरा हुआ होने की वजह से वो नजर नहीं आता है। जो पदार्थ महदूद होगा, अगल बगल कुछ नहीं होगा वो नजर आएगा। इसलिए ईश्वर नजर नहीं आता है। ईश्वर नजर न आने का मूल कारण ही ये है। उसका अगल बगल भी फुल है। उसका चिंतन करते करते ये जेड़ा बनाने वाला है, यह बनाने वाला खत्म हो जाएगा। बनाने वाला खत्म होने के बाद वो ही चीज बचा रहेगा। वही यथार्थ स्थिति है, ईश्वर स्थिति भी वही है। जब तक वह स्थिति नहीं मिलेगे तो हमारे जिंदगी अधूरी माना जाएगा। अधूरावस्था के अंदर जो कुछ होयेगा, अधूरा ही होयेगा। फुल तो कोई बन नहीं सकता है। यह अधूरापर को खत्म करना है तो उस व्यापक पदार्थ को हमें हर जगह के अंदर अनुसंधान करते रहना होगा। हर जहग उस ईश ॉवर और चैतण्य को अनुभव करते रहना होगा। ईश्वर हर चीज के अंदर है। ऐसा नहीं है कि वह होता नहीं है हमें नजर नहीं आता है उसका मूल कारण मैने बताया। ईश्वर ज़्यों नहीं नजर आता। उसका कारण मैने बताया कि वह व्यापक होने की वजह से, उसके अगल बगल खाली न होने की वजह से वह

नजर नहीं आता है। नजर न आने के बावजूद भी उसके अंदर हम स्थिरता प्राप्त कर सकते हैं। अभी भी उसी के अंदर स्थिर है। अभी कहां टिका हुआ हो? ईश्वर के अंदर हो तो हम टिका हुआ है। अन्यत्र कोई जगह ही नहीं। और किसी को हटाने के लिए कोई जगह ही नहीं है। ईश्वर के अंदर ही हम टिका हुआ है। टिका हुआ होने के बावजूद भी हम उसे देख नहीं सकता है। ज़्योंकि उसका अगल बगल नहीं है। सर्वत्र भरा हुआ है। नजर नहीं आता है जिस टाइम पर हमारे मन बुद्धि के विकार नष्ट हो जाता है, फिर वो ही बचा रहता है, वो ही अखण्ड स्थिति है। उसी में जाकर शांति होयेगी। वो ही मनुष्य का लक्ष्य है। वो ही वास्तव में हमारा घर है। वहीं जाकर हमें विश्राम मिल सकता है। अन्यत्र कहीं भी जाकर विश्राम नहीं मिलेगा। इसलिए हमारे कहने का मतलब यह है कि यदि मनुष्य जिंदगी को सफल बनाना हो तो उस आत्म तत्व को बचाने की कोशिश करो। इसी में कल्याण है।

卐 बोलो स्वामी जी महाराज की जय 卐